

क क

क क

वेस्पर लिब्र

Vesper Libre

Regular | Medium | Bold | Heavy

अआइईउऊऐएऐओ
ओऔअः । ॥

कखगघङचछजझञ
टठडढणातथदधन
पफबभमयरलळवश-
सहळक्षज्ञ
श ल

०१२३४५६७८९

त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः त्र तृ र्त तिं तीं

थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः थृ थ्र् थर् थिं थीं
 द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः दृ द्र् दर् द्रिं दीं
 ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः ध्र् धृ धर् धिं धीं
 न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः नृ न्र् नर् निं नीं
 प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः प्र् पृ पर् पिं पीं
 फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः फृ फ्र् फर् फिं फीं
 ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः ब्र् बृ बर् बिं बीं
 भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः भृ भ्र् भर् भिं भीं
 म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः मृ म्र् मर् मं मीं
 य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः यृ य्र् यर् यं यीं
 र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः र्र् रिं रीं
 व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः वृ व्र् वर् वं वीं
 ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः लृ ल्र् लर् लं लीं
 स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः सृ स् स्
 ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः ह्र् हिं हीं
 ळ ऴ ऴि ऴी ऴु ऴू ऴे ऴै ऴो ऴौ ऴं ऴः ऴ्र् ऴर् ऴिं ऴीं

कि की
खि खी
गि गी
घि घी
चि ची
छि छी
जि जी
झि झी
टि टी
ठि ठी
डि डी
ढि ढी
णि णी
ति ती
थि थी
दि दी
धि धी
नि नी
पि पी
फि फी
बि बी
भि भी
मि मी
यि यी
रि री
वि वी
लि ली
सि सी
हि ही
ळि ळी

कि की
खि खी
गि गी
घि घी
चि ची
छि छी
जि जी
झि झी
टि टी
ठि ठी
डि डी
ढि ढी
णि णी
ति ती
थि थी
दि दी
धि धी
नि नी
पि पी
फि फी
बि बी
भि भी
मि मी
यि यी
रि री
वि वी
लि ली
सि सी
हि ही
ळि ळी

कि की
खि खी
गि गी
घि घी
चि ची
छि छी
जि जी
झि झी
टि टी
ठि ठी
डि डी
ढि ढी
णि णी
ति ती
थि थी
दि दी
धि धी
नि नी
पि पी
फि फी
बि बी
भि भी
मि मी
यि यी
रि री
वि वी
लि ली
सि सी
हि ही
ळि ळी

कि की
खि खी
गि गी
घि घी
चि ची
छि छी
जि जी
झि झी
टि टी
ठि ठी
डि डी
ढि ढी
णि णी
ति ती
थि थी
दि दी
धि धी
नि नी
पि पी
फि फी
बि बी
भि भी
मि मी
यि यी
रि री
वि वी
लि ली
सि सी
हि ही
ळि ळी

Adobe Devanagari

क का कि की कु कू कृ कृ कँ के के कै काँ को को कौ क्ल क्ल कं कां
 किं कीं कुं कूं कृं कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ क्लं क्लं कं कां किं कीं
 कुं कूं कृं कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ क्लं क्लं कः काः किः कीः कुः
 कूः कृः कृः कँः केः केः कैः काँः कोः कोः कौः क्लूः क्लूः कर् का कि की
 कृ कृ कृ कृ कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ क्ल क्ल कँ काँ किं कीं कुं कूं कृं
 कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ क्ल क्ल कर् का किं कीं कुं कूं कृं कृं कँ केँ
 केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ क्ल क्ल कः काः किः कीः कुः कूः कृः कृः कँः केँः
 केँः केँः काँः कोँः कोँः कोँः क्लः क्लः प्ल

VesperDevanagari

क का कि की कु कू कृ कृ कँ के के कै काँ को को कौ क्ल क्ल कं कां
 कां किं कीं कुं कूं कृं कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ क्लं क्लं कं कां
 किं कीं कुं कूं कृं कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ क्लं क्लं कं काः
 किः कीः कुः कूः कृः कृः कँः केः केः कैः कँ काँः कोः कोः कौः
 क्लूः क्लूः कर् का कि की कुं कूं कृं कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ
 कोँ क्ल क्ल कँ काँ किं केँ कीं कुं कूं कृं कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ
 कोँ क्ल क्ल कर् का किं कीं कुं कूं कृं कृं कँ केँ केँ केँ काँ कोँ कोँ कोँ
 क्ल क्ल कः काः किः कीः कुः कूः कृः कृः कँः केँः केँः केँः केँः काँः कोँः
 कोँः कोँः क्लः क्लः कँ केँ केँ केँ कँ कँ कँ

[illegible]

ढी	त्यि	थ्रि	ध्लि	न्यि	न्म्यि	ळि	ब्धि
द्वि	त्रि	थ्लि	ध्वि	त्रि	क्वि	प्र्यि	बि
ढ्यि	त्लि	थ्वि	ध्सि	न्लि	ड्वि	फ्रिक्	बि
ण्टि	त्वि	थ्सि	न्कि	न्वि	ष्टि	फ्रिज	ब्बि
ण्टी	त्सि	द्रि	न्खि	न्सि	ष्टि	फ्रिटि	ब्रि
ण्ठि	त्क्यि	द्वि	न्चि	न्हि	ष्टी	फ्रित्ति	ब्लि
ण्डि	क्लि	द्वि	न्छि	न्भ्यि	ष्टि	फ्रिट्	ब्बि
ण्ढि	क्लि	द्वी	न्जि	न्भ्वि	ष्टि	फ्रिन्	भ्रि
णि	त्खि	द्वि	न्झि	न्म्यि	णि	फ्रिफ्रि	भ्र्यि
ण्ति	त्खि	द्वी	न्टि	न्स्टि	प्ति	फ्रिमि	भ्रि
ण्यि	त्खि	द्वि	न्ठि	न्स्यि	प्थि	फ्रियि	भ्र्लि
प्रि	न्म्यि	द्वि	न्डि	न्ह्यि	प्दि	फ्रि	भ्र्वि
प्रि	त्प्रि	झि	न्ढि	न्ज्यि	प्धि	फ्रिलि	भ्र्यि
क्लि	त्प्लि	झी	न्ति	न्क्सि	प्नि	फ्रिशि	म्रि
त्खि	त्म्यि	घि	न्थि	न्त्यि	प्पि	क्कि	म्रि
त्ति	त्सि	द्वि	न्दि	न्त्सि	प्फि	ब्जि	म्रि
त्थि	त्स्यि	द्वि	न्धि	न्थ्यि	प्मि	ब्झि	म्रि
त्नि	त्स्वि	द्व्यि	न्नि	न्थ्वि	प्पि	ब्ठि	म्रि
त्पि	त्स्यि	ध्रि	न्पि	न्द्रि	प्प्रि	ब्ठि	म्रि
त्फि	त्थ्रि	ध्रि	न्फि	न्द्वि	प्प्लि	ब्ठि	म्रि
त्बि	त्थि	ध्रि	न्बि	न्ध्यि	प्पि	ब्ठि	म्रि
त्भि	त्थि	ध्रि	न्भि	न्ध्रि	प्पि	ब्ठि	म्रि
त्मि	त्थि	ध्रि	न्मि	न्प्रि	प्पि	ब्ठि	म्रि

म्वि	लजि	शिके	स्ति	हि
मशि	लटि	शिखे	स्थि	ह्मिय
मसि	लठि	श्चि	स्दि	हि
महि	लडि	शिछ	स्मि	हि
मम्यि	लढि	शिटि	स्पि	ह्री
मम्रि	लित्ति	शित	स्फि	हि
मब्ब्यि	लथि	श्चि	स्बि	ह्री
मब्रि	लिट्ठि	शिव	स्मि	हि
मभ्यि	लपि	शिम	स्यि	ह्री
मभ्रि	लफि	शिय	स्रि	व्यि
मभ्वि	लबि	श्चि	स्लि	व्यि
य्यि	लभि	शिल	स्वि	व्यि
प्रि	लमि	श्चि	स्सि	क्ष्यि
नि	ल्यि	शिश	स्म्यि	क्षिम
व्यि	ल्लि	श्च्यि	स्क्रि	क्षिव
व्रि	ल्वि	स्कि	स्त्यि	
व्लि	लस्यि	स्वि	स्थ्यि	
व्रि	लह	स्थि	स्म्यि	
ह्रि	ल्ल्यि	स्जि	स्त्वि	
ल्रि	ल्ल्यि	स्ति	स्प्रि	
ल्रि	ल्ल्यि	स्ति	स्न्यि	
ल्रि	ल्ल्यि	स्डि	हि	
ल्रि	ल्ल्यि	स्डि	ह्यि	

[illegible]

[illegible]

Conjuncts and word testing

तरक्क्री	स्त्री	उज्ज	दर्जु जेय
ज्यादा	धड्यां	संस्कृत	उर्दू
मन्जूर	शक्ति	हिंस	निर्द्वन्द्व
इलेक्ट्रान	महाराष्ट्र	छुट्टी	सिर्फ
स्ट्रीटकार	कट्टू	चिट्ठी	हिस्की
छुट्टी	रूप	विशाखपट्टम	इश्क
महाराष्ट्र	हूँ	ट्रेन	प्रश्न
ज्येष्ठ	बुत्तो	सुपाठ्य	रुश्द
दर्शात	बार्गी	लड्डू	वैशिष्ट्य
चिट्ठी	कुंग	ब्रह्मण्य	ओष्ठ्य
वाङ्मय	हूप	उत्क्रम	मिस्त्री
वैशिष्ट्य	फ्रीज	उत्क्षेप	आह्वान
पुनस्थापना	हितिक	विद्युत्ग्रहक	आह्लाद
स्वास्थ्य	एलजे	महत्त्व	हास
कम्प्यूटर	उत्थ	पत्थर	अंकुड़ा
सान्ध्य	उत्थ	विद्युत्दर्शी	अंतर्निहित
इज्जत	रत्न	पत्नी	अन्तः
उज्ज्वल	सज्स	सपत्न्य	अंतर्वेशन
प्राप्त्याशा	एज्जा	उत्प्रवास	अग्नि
इकतीस	ब्यर्थे	त्र्याहिक	अद्भुत
सत्रह	तरक्क्री	विद्युतशक्ति	छुछुंदर
पद्म	फ्रैक्चर	हत्स्थल	हुंकार
विद्यार्थी	डॉक्टर	ज्योत्स्ना	हित इच्छुक
उन्नीस	इलेक्ट्रॉन	ईषत्स्पृष्ट	कुरी
पश्चिम	रक्त	उत्सुत	कुल्हिया
श्रीलंका	वक्त्र युक्त्यभास	सद्गति	नूपुर
विश्वविद्यालय	वक्त्र	सद्गन्ध	क्षूद्र
स्नान	शुक्ल	उद्घाटन	धृतराष्ट्र
बुद्ध	रिक्शा	जिद्दी	दुःख
आह्लाद	पक्ष	प्रसिद्ध	सुष्ठुतिम
ब्राह्मण	लक्ष्मी	उद्बोध	यक्रोनन की
मिस्त्री	अभक्ष्य	द्रव	फ्रीडम
दुष्प्रह	दिक्स्थापन	दारिद्र्य	फ्रीडम
अद्भुत	सख्त	अध्रुव	न्यूक्लियर
इल्जाम	अख्त्यार	मंजूर	ऽनश्चदां
अक्षरे	जख्म	मंत्री	हफ्ते ई
ज्ञान	खिष्टां	स्वातंत्र्य	
मौके	फ़ख़	द्वंद्व	
कैंटोमेंट	अग्रास	उन्नीस	
छूट कुछ	मग़ज	इंस्टिट्यूट	
करेंट	सम्यग्ज्ञान	उन्हें	
राष्ट्रून	दिग्दर्शन	दीन्हो	
कॉफी	पंक्ति	नैप्सून	
हिंदू-मुस्लिम	मंगलवार	प्राप्त	
करणाया	दर्लुध्य	सब्जी	
स्नेह	पच्चीस	छब्बीस	
श्री	अच्छा	मार्किट	

सुकाज सरसराहट सुधारविरोधी चल कोने होनेवाला कलहकारिता गठबंधनहीन बाजे परिदाय मितीकाटे एव मुषक तगर उदजन लख एकजुट द पोखरा रोल मामलों अजय उभय मांडलिकता दयाविहीनता लोउ वकीलों पग जी तो बहरुपिया विपदा जलपीटिका ड वेदिका साए कमीं मेहमानदारी वजह परेत हिकमती दुखदायी वेणा ऊष घराता वररुचि गिरजाधिकारी लोन म रीतिवाद मतानुगामी पतालेखी चांद न मुहावरा चंदक अचार अनमुरझाया नन दपट अधिवानर कामांध दंडाधिकारी दुलहन धुनी ससंझवाती रचेता धिग सरदल अवीरा सुनागरता बीमा रम नमकदान मतानुगमिता धो इ सोमाद ब खील सरलरेखाकारा वासवी अनुमानहीनता वद मेढ ढंकी ज मांसाहार सुपरिपाति जमाना दंय ब नर केन महता परंजय मुबारकबादी बबुई वाकिफकारी याद असवांगीणता अनुकंपनीयता डाईमेकर नदनु नापदड सोलही कणरी

सुकाज सरसराहट सुधारविरोधी चल कोने होनेवाला कलहकारिता गठबंधनहीन बाजे तगर उदजन लख एकजुट द पोखरा रोल मामलों अजय उभय मांडलिकता दयाविहीनता लोउ वकीलों पग जी तो मतानुगामी पतालेखी चांद न मुहावरा चंदक अचार अनमुरझाया नन दपट अधिवानर कामांध दंडाधिकारी दुलहन धुनी ससंझवाती रचेता धिग सरदल अवीरा सुनागरता बीमा रम नमकदान मतानुगमिता धो इ सोमाद ब खील सरलरेखाकारा वासवी अनुमानहीनता वद मेढ ढंकी ज मांसाहार सुपरिपाति जमाना दंय ब नर केन महता परंजय मुबारकबादी बबुई वाकिफकारी याद असवांगीणता अनुकंपनीयता डाईमेकर नदनु नापदड सोलही कणरी एकाधिकारवाद

प्राप्त है। भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक, सिंधु घाटी सभ्यता का विकास स्थान था, और तब से ऐतिहासिक व्यापार पथों का अभिन्न अंग रहा है। चार प्रमुख धर्मों : सनातन-हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा सिख का उद्भव और विकास भारत में हुआ और यहूदी, ईसाई, पारसी और ईस्लाम धर्म प्रथम सहस्राब्दी में भारत में आये, और भारत की विविध संस्कृति को जन्म दिया। भारत भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा राष्ट्र है। भारत की रजधानी नई दिल्ली है। भारत के अन्य बड़े महानगर मुम्बई (बम्बई), कोलकाता (कलकत्ता) और चेन्नई (मद्रास) हैं। क्रमिक विजयों के परिणामस्वरूप ब्रिटिश ईस्ट ईण्डिय ने १८वीं और १९वीं सदी में भारत के ज्यादातर हिस्सों को अपने राज्य में मिला लिया। १८५७ के विफल विद्रोह के बाद भारत के प्रशासन का भार ब्रिटिश सरकार ने अपने ऊपर ले लिया। ब्रिटिश भारत के रूप में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रमुख अंग भारत ने १९४७ में महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक लम्बे और मुख्य रूप से अहिंसक स्वतन्त्रता संग्राम के बाद आजादी

पाई। १९५० में लागू हुए नये संविधान में इसे सार्वजनिक वयस्क मताधिकार सम्पन्न संवैधानिक लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित कर दिया गया और युनाईटेड किंगडम की तर्ज पर वेस्टमिंस्टर शैली की संसदीय सरकार स्थापित की गयी। लम्बे समय तक समाजवादी आर्थिक नीतियों का पालन करने के बाद विगत २० वर्ष में भारत ने उदारीकरण और वैश्वीकरण की नयी नीतियों के आधार पर सार्थक आर्थिक और सामाजिक प्रगति की है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था क्रय शक्ति समता के आधार पर विश्व की चौथी और मानक मूल्यों के आधार mumbai पर विश्व की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारतीय सेना एक क्षेत्रीय शक्ति है। प्राचीन हिन्दू पुराणों के अनुसार भारत को एक सनातन राष्ट्र माना जाता है क्योंकि यह मानव-सभ्यता का पहला राष्ट्र था। श्रीमद्भागवत के पञ्चम स्कन्ध में भारत राष्ट्र की स्थापना का वर्णन आता है। भारतीय दर्शन के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति के पश्चात ब्रह्मा के मानस पुत्र स्वयंभू मनु ने व्यवस्था सम्भाली। इनके दो पुत्र, प्रियव्रत और उत्तानपाद थे। उत्तानपाद भक्त ध्रुव के पिता थे। इन्हीं प्रियव्रत के दस पुत्र थे। तीन पुत्र बाल्यकाल से ही विरक्त थे। इस कारण प्रियव्रत ने पृथ्वी को सात भागों में विभक्त कर एक-एक भाग प्रत्येक पुत्र

इन्हीं में से एक थे आग्नीध्र जिन्हें जम्बूद्वीप का शासन कार्य सौंपा गया। वृद्धावस्था में आग्नीध्र ने अपने नौ पुत्रों को जम्बूद्वीप के विभिन्न नौ स्थानों का शासन दायित्व सौंपा। इन नौ पुत्रों में सबसे बड़े थे नाभि जिन्हें हिमवर्ष का भू-भाग मिला। इन्होंने हिमवर्ष को स्वयं के नाम अजनाभ से जोड़ कर अजनाभवर्ष प्रचारित किया। यह हिमवर्ष या अजनाभवर्ष ही प्राचीन भारत देश था। राजा नाभि के पुत्र थे ऋषभ। ऋषभदेव के सौ पुत्रों में भरत ज्येष्ठ एवं सबसे गुणवान थे। ऋषभदेव ने वानप्रस्थ लेने पर उन्हें राजपाट सौंप दिया। पहले भारतवर्ष का नाम ऋषभदेव के पिता नाभिराज के नाम पर अजनाभवर्ष प्रसिद्ध था। भरत के नाम से ही devanagari लोग अजनाभखण्ड को भारतवर्ष कहने लगे। में अपनी स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने ज्यादातर देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखा है। १९५० के दशक में, भारत ने दृढ़ता से अफ्रीका और एशिया में यूरोपीय कालोनियों की स्वतंत्रता का समर्थन किया और गुट निरपेक्ष आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका निभाई। १९८० के दशक में भारत ने आमंत्रण

पतनासु दुष्टा या वाजेषु शरवाया। या पञ्च चर्षणीर अभून्दाग्री ता हवामहे॥ तयोर इदं अमवच छवस तिम्रा दिद्युन मघोनोः। परति दरुणा गभस्त्योर गवां वर्त्रघ्न एषते॥ ता वाम एषे रथानाम इन्द्राग्री हवामहे। पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा॥ ता वर्धन्ताव अनु दयून मर्ताय देवाव अदभा। अर्हन्ता चित पुरो दधे ऽशेव देवाव अर्वते॥ एवेन्द्राग्रिभ्याम अहावि हव्यं शूष्यं घर्तं न पूतम अद्रिभिः। ता सूरिषु शरवो बर्हद रयिं गर्णत्सु दिध्मत इषं गर्णत्सु दिध्मत॥ आ वां नरा पुरुभुजा वक्र्यां दिवे-दिवे चिद अश्विना सखीयन॥ युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बर्हतो विपश्चितः। वि होत्रा दधे वयुनाविद एक इन मही देवस्य सवितुः परिष्ठातिः॥ विश्वा रूपाणि परति मुञ्जते कविः परासावीद भद्रं दविपदे चतुष्पदे। वि नाकम अख्यत सविता वरेण्यो ऽनु परयाणम उषसो वि राजति॥ यस्य परयाणम अन्व अन्य इदं ययुर देवा देवस्य महिमानम ओजसा। यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना॥ उत यासि सवितस तरीणि रोचनोत सूर्यस्य रश्मिभिः सम उच्यसि। उत रात्रीम उभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मीभिः॥ उतेशिषे परसवस्य तवम एक इदं उत पूषा भवसि देव यामभिः। उतेदं विश्वम भुवनं वि राजसि शयावाश्वस ते सवित सतोमम आनशे॥ परति परयाणम असुरस्य विद्वान सूतैर देवं सवितारं दुवस्य। उप बरुवीत नमसा विजानज जयेष्टं च रत्नं विभजन्तम आयोः॥ अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर वस्त उग्रः। इन्द्रो विष्णुर वरुणो मित्रो अग्रिर अहानि भद्रा जनयन्त दस्माः॥ तन नो अनर्वा सविता वरुथं तत सिन्धव इषयन्तो अनु गमन। उप यद वोचे अध्वरस्य होता रायः सयाम पतयो वाजरत्नाः॥ पर ये वसुभ्य ईवद आ नमो दूर ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः। अवैत्व अभ्वं कर्णुता वरीयो दिवसिस्थव्योर अवसा मदेम॥ र शर्धाय मारुताय सवभानव इमां वाचम अनजा पर्वतच्युते। घर्मस्तुभे दिव आ पृथयज्वने दयुमन्श्रवसे महि नर्मणम अर्चत॥ पर वो मरुतस तविषा उदन्यवो वयोध्वो अश्वयुजः परिज्ययः। सं विद्युता दधति वाशति तरितः सवरन्त्य आपो ऽवना परिज्ययः॥ विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः। अब्दया चिन मुहुर आ हरादुनीव्रत सतनयदमा रभसा उदोजसः॥ वय अत्कून रुद्रा वय अहानि शिक्वसो वय अन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः। वि यद अज्रां अजथ नाव ई यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ॥ तद वीर्यं वो मरुतो महित्वनं दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम। एता न यामे अग्नीतशोचिषो ऽनश्वदां यन नय अयातना गिरिम॥ अभाजि शर्धो मरुतो यद अर्णसम मोषथा वक्षं कपनेव वेधसः। अध समा नो अरमतिं सजोषसश चक्षुर इव यन्तम अनु नेषथा सुगम॥ न स जीयते मरुतो न हन्यते न सरेधति न वयथते न रिष्यति। नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय र्षिं वा यं राजानं वा सुषूदथ॥ नियुत्वन्तो गरामजितो यथा नरो ऽरयमणो न मरुतः कबन्धिनः। पिन्वन्त्य उत्सं यद इनासो अस्वरन वय उन्दन्ति पर्थिवीम मध्वो अन्धसा॥ परवत्वतीयम पर्थिवी मरुद्भ्यः परवत्वती दयौर भवति परयद्भ्यः। परवत्वतीः पथ्य अन्तरिक्ष्याः परवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः॥ यन मरुतः सभरसः सवर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः। न वो ऽशवाः शरथयन्ताह सिंस्रतः सद्यो अस्याध्वनः पारम अश्रुथ॥ अंसेषु व रष्टयः पत्सु खादयो वक्षसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः। अग्रिभाजसो विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः॥ तं नाकम अर्यो अग्नीतशोचिषं रुशत पिप्पलम मरुतो वि धूनुथ। सम अच्यन्त वर्जनातिविषन्त यत सवरन्ति घोषं विततम रतायवः॥ युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः सयाम रथ्यो वयस्वतः। न यो युछति तिष्ठो यथा दिवो ऽसमे रारन्त मरुतः सहस्रिणम॥ यूयं रयिम मरुत सपार्हवीरं यूयम र्षिम अवथ सामविप्रम। यूयम अर्वन्तम भरताय वाजं यूयं धत्य राजानं शरुष्टिमन्तम॥ तद वो यामि दरविणं सद्युतयो येना सवर ण ततनाम नृर अभि। इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो यस्य तरेम तरसा शतं हिमाः॥ हयो न विद्रो अयुजि सवयं धुरि तां वहामि परतरणीम अवस्युवम। नास्या वश्मि विमुचं नात्रम पुनर विद्वान पथः पुरेत रजु नेषति॥ अग्र इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः पर यन्त मारुतोत विष्णो। उभा नासत्या रुद्रो अध गनाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्ता॥ इन्द्राग्री मित्रावरुणादितिं सवः पर्थिवीं दयाम मरुतः पर्वतां अपः। हुवे विष्णुम पूषणम बरह्मणस पतिम भगं नु शंसं सवितारम ऊतये॥ उत नो विष्णुर उत वातो अस्मिधो दरविणोदा उत सोमो मयस करत। उत रभव उत राये नो अश्विनोत तवष्टोत विभ्वानु मंसते॥ उत तयन नो मारुतं शर्धं आ गमद दिविक्षयं यजतम बर्हिर आसदे। बर्हस्पतिः शर्म पूषेत नो यमद वरुथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा॥ उत तये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस तरामणे भुवन। भगो विभक्ता शवसावसा गमद उरुव्यचा अदितिः शरोतु मे हवम॥ देवानाम पत्नीर उशतीर अवन्तु नः परावन्तु नस तुजये वाजसातये। याः पार्थिवासो या अपाम अपि वरते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यछत॥ उत गना वयन्तु देवपत्नीर इन्द्राण्य अग्राय्य अश्विनी राट। आ रोदसी वरुणानी शर्णोतु वयन्तु देवीर य रतुर जनीनाम। मनुष्वत तवा नि धीमहि मनुष्वत सम इधीमहि। अग्रे मनुष्वद अङ्गिरो देवान देवयते यज॥ तवं हि मानुषे जने ऽगने सुप्रीत इध्यसे। सरुचस तवा यन्त्य आनुषक सुजात सर्पिरासुते॥ तवां विश्वे सजोषसो देवासो दूतम अक्रत। सपर्यन्तस तवा कवे यज्ञेषु देवम ईळते॥ देवं वो देवयज्ययाग्रिम ईळीत मर्त्यः। समिद्धः शुक्र दीदिह रतस्य योनिम आसदः ससस्य योनिम आसदः॥ अग्रिं तम मन्ये यो वसुर अस्तं यं यन्ति धेनवः। अस्तम अर्वन्त आशवो ऽसतं नित्यासो वाजिन इषं सतोत्र्य आ भर॥ सो अग्रिर यो वसुर गर्णे सं यम आयन्ति धेनवः। सम अर्वन्तो रघुद्वजः सं सुजातासः सूर्य इषं सतोत्र्य आ भर॥ अग्रिर हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः। अग्री राये सवाभुवं स परीतो याति वार्यम इषं सतोत्र्य आ भर॥ आ ते अग्र इधीमहि दयुमन्तं देवाजरम। यद ध सया ते पनीयसी समिद दीदयति दयवीषं सतोत्र्य आ भर॥ आ ते अग्र रचा हविः शुक्रस्य शोचिषस पते। सुश्वन्द्र दस्म विशपते हव्यवाट तुभ्यं हूयत इषं सतोत्र्य आ भर॥ परो तये अग्रयो ऽगनिषु विश्वम पुष्यन्ति वार्यम। ते हिन्विरे त इन्विरे त इष्यन्त्य आनुषग इषं सतोत्र्य आ भर॥ तव तये अग्रे अर्चयो महि वराधन्त वाजिनः। ये पत्वभिः शफानां वरजा भुरन्त गोनाम इषं सतोत्र्य आ भर॥ नवा नो अग्र आ भर सतोत्र्यः सुक्षितीर इषः। ते सयाम य आत्र्युस तवादूतासो दमे-दम इषं सतोत्र्य आ भर॥ उभे सुश्वन्द्र सर्पिषो दर्वा शरीणीष आसनि। उतो न उत पुपूर्या उक्थेषु शवसस पत इषं सतोत्र्य आ भर॥ एवं अग्रिम अजुर्यमुर गीर्भिर यज्ञेभिर आनुषक। दधद अस्मे सुवीर्यम उत तयद आश्वश्व्यम इषं सतोत्र्य आ भर॥ तय अर्यमा मनुषो देवताता तरी रोचना दिव्या धारयन्त। अर्चन्ति तवा मरुतः पूतदक्षास तवम एषाम र्षिर इन्द्रासि धीरः॥ अनु यद ईम मरुतो मन्दसानम आर्चत्र इन्द्रम पपिवांसं सुतस्य। आदत्त वज्रम अभि यद अहिं हन्न अपो यहीर अरुजत सर्तवा उ॥ उत बरह्माणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः। तद धि हव्यम मनुषे गा अविन्दद अहन्न अहिम पपिवां इन्द्रो अस्य॥ आद रोदसी वितरं वि षकभायत संविव्यानश चिद भियसे मार्गं कः। जिगर्तिम इन्द्रो अपजगुराणः परति शवसन्तम अव दानवं हन॥ अध करत्वा मघवन तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम। यत सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीर उपरा एतशे कः॥ नव यद अस्य नवतिं च भोगान साकं वज्रेण मघवा विस्त्रत। अर्चन्तीन्द्रम मरुतः सधस्थे तरेष्टुभेन वचसा बाधत दयाम॥ सखा सख्ये अपचत तूयम अग्रिर अस्य करत्वा महिषा तरी शतानि। तरी साकम इन्द्रो मनुषः सरांसि सुतम पिबद वर्त्रहत्याय सोमम॥ तरी यच छता महिषाणाम अघो मास तरी सरांसि मघवा सोम्यापाः। कारं न विश्वे अहन्त देवा भरम इन्द्राय यद अहिं जघान॥ उशना यत सहस्यैर अयातं गहम इन्द्र जूजुवानेभिर अश्वैः। वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैर अवनोर ह शुष्णम॥ परान्यच चक्रम अद्रः सूर्यस्य कुत्सायान्यद वरिवो यातवे ऽकः। अनासो दस्यूर अग्नो वधेन नि दुर्योण आग्राङ् मध्ववाचः॥ सतोमासस तवा गौरिवीतेर अवधत्र अन्धयो वैदथिनाय पिप्पुम। आ तवाम रजिश्वा सख्याय चक्रे पचन पत्नीर अपिबः सोमम अस्य॥ नवगवासः सुतसोमास इन्द्रं दशगवासो अभ्य अर्चन्त्य अर्कैः। गव्यं चिद ऊर्वम अपिधानवन्तं तं चिन नरः शशमाना अप वरन॥ कथो नु ते परि चराणि विद्वान वीर्यं मघवन या चकर्थ। या चो नु नव्या कर्णवः शविष्ठ परेद उ ता ते विदथेषु बरवाम॥ एता विश्वा चक्रां इन्द्र भूर्य अपरीतो जनुषा वीर्येण। या चिन नु वज्रिन कर्णवो दध्म्वान न ते वर्ता तविष्ठा अस्ति तस्याः॥ इन्द्र बरह्म करियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म। वस्त्रेव भद्रा सुक्रता वसूयू रथं न धीरः सवपा अतक्षम॥ आ यज्ञैर देव मर्त्य इत्या तव्यांसम ऊतये। अग्रिं कर्ते सवध्वरे पूर ईळीतावसे॥ अस्य हि सवयशस्तर आसा विधर्मन मन्यसे। तं नाकं चित्रशोचिषम मन्द्रम परो मनीषया॥ अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा। दिवो न यस्य रेतसा बर्हच छोचन्त्य अर्चयः॥ अस्य करत्वा विचेतसो दस्मस्य वसु रथ आ। अधा विश्वासु हव्यो ऽगनिर विश्वु पर शस्यते॥ नू न इद धि वार्यम आसा सचन्त सूरयः। ऊर्जो नपाद अभिष्टये पाहि शग्धि सवस्तय उतैधि पत्सु नो वर्धे॥ अग्रे पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान वक्षि यक्षि च॥ तं तवा घर्तस्नव ईमहे चित्रभानो सवर्द्धशम। देवां आ वीतये वह॥ वीतिहोत्रं तवा कवे दयुमन्तं सम इधीमहि। अग्रे बर्हन्तम अध्वरे॥ अग्रे विश्वेभिर आ गहि देवेभिर हव्यदातये। होतारं तवा वर्णीमहे॥ यजमानाय सुन्वत आग्रे सुवीर्य वह। देवैर आ सत्सि बर्हिषि॥ समिधानः सहस्रजिद अग्रे धर्माणि पुष्यसि। देवानां दूत उक्थ्यः॥ नय अग्रिं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्ठयम। दधाता देवम रत्विजम॥ पर यज्ञ एत्व आनुषग अद्या देवव्यचस्तमः। सत्रगीत बर्हिर आसदे। एदम मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः। देवासः सर्वया विशा॥ यस ते साधिष्ठो ऽवस इन्द्र करतुष टम आ भर। अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्मिं वाजेषु दुष्टम॥ यद इन्द्र ते चतस्रो यच छूर सन्ति तिस्रः। यद वा पञ्च कषितीनाम अवस तत सु न आ भर॥ आ ते ऽवो वरेण्यं

दादर रेल्वे स्टेशनच्या प्लॅटफॉर्म क्रमांक ६वरील ओव्हरहेड वायरवर झाड कोसळल्याने सीएसटीकडे जाणारी अपफास्ट मार्गवरील वाहतूक विस्कळीत झाली होती. मात्र या मार्गवरील दुरुस्तीचे काम पूर्ण झाले असून रेल्वेचे वेळापत्रक पूर्वपदावर येऊ लागले आहे. दादरच्या प्लॅटफॉर्म क्रमांक ६वरील ओव्हरहेड वायरवर सहाच्या सुमारास एक झाड कोसळले. या मुळे ओव्हरहेड वायर तुटून सीएसटीकडे जाणाऱ्या अप फास्ट मार्गवरील वाहतूक बंद पडली. या मार्गवरील गाड्या धीम्या मार्गावर वळवण्यात आल्या. त्यामुळे एन गर्दीच्यावेळी गाड्या सुमारे २० ते २५ मिनिटे धावू लागल्या होत्या. डाऊन मार्गवरील अनेक गाड्या रेल्वेकडून रद्द करण्यात आल्या. दरम्यान, झाड हटवण्याचे हे काम पूर्ण होण्यासाठी दोनतास लागल्याने वाहतूक पूर्ववत होईपर्यंत प्रवाशांना त्रास सहन करावा लागला. सिनेमा थिएटरवर लावला जातो. सिंगल स्क्रीन आणि मल्टिप्लेक्स अशा दोन पद्धतीच्या थिएटर्समध्ये तो लागतो. कोणत्या शोला किती कलेक्शन झालं, याचा रितसर ई-मेल थिएटरकडून वितरकाला, निर्मात्यांना येत असतो. याला 'डीसीआर' अर्थात डेली कलेक्शन रिपोर्ट म्हणतात. 'मल्टिप्लेक्स'वाले दर खेळाच्या दुसऱ्या दिवशी ई-मेलवरून आदल्या दिवसाचं कलेक्शन कळवत असतात. थिएटरच्या सीट्स, झालेलं बुकिंग अशी सगळी माहिती यात असते. सिंगल स्क्रीनवाल्यांची पद्धत मात्र वेगळी आहे. इथे रोज ई-मेल पाठवला जात नाही. तर सिनेमाला मिळणारा प्रतिसाद रोज फोनवरून कळवला जातो. वितरक, निर्माते 'त्या' फोनवर विसंबून असतात. उदाहरणार्थ, चंद्रपूरमधल्या १०० सीट्सच्या सिंगल स्क्रीनवाल्याने 'शो हाऊसफुल्ल'ची ग्वाही फोनवरून दिली की शंभर तिकीटांचा रेट एकूण कलेक्शनमध्ये 'अँड' केला जातो. समजा महाराष्ट्रात एकूण १०० सिंगल स्क्रीन्सवर सिनेमा लागला असेल, तर या फोनवरून या शंभर थिएटर्सचं कलेक्शन गृहित धरलं जातं. या सिंगल स्क्रीनवाल्यांचाही 'डीसीआर' असतो. पण, सिनेमा लागल्यावर आठवड्याभरानंतर तो डीसीआर येतो. त्यावेळेपासून सिंगल स्क्रीन्सचं किमान चित्र स्पष्ट व्हायला सुरूवात होते. यातली दुसरी गोम अशी की, सिंगल स्क्रीन्सची ही आकडेमोड सरधोपट असते. म्हणजे १०० खुर्च्यांपैकी ८० खुर्च्या भरल्या की 'सिंगल स्क्रीन'वाल्यांसाठी शो 'हाऊसफुल्ल' असतो. त्यांच्या लेखी २० रिकाम्या खुर्च्यांना 'किंमत' नसते. अशी गत १०० पैकी ६० थिएटर्समध्ये असते. तरीही महाराष्ट्रातून मुंबईपर्यंत आलेला रिपोर्ट 'सर्वत्र हाऊसफुल्ल' असतो. 'सिंगल'वाल्यांचा आठवडाभरानंतर 'डीसीआर' आल्यावर त्यात या रिकाम्या खुर्च्यांची दखल दिसते. पण तोवर कलेक्शनच्या अंदाजांचा फुगा हवेत उंच झोकांड्या घेत असतो. हुकमी एक्का बुकिंगचा बुकिंगचे सगळे ताळे खोटे असतात असं नाही. ज्या सिनेमांची चर्चा कोटींमध्ये होते, त्यांच्याकडे निश्चित गर्दीचा प्रवाह असतो. परंतु, त्यासाठी काही स्ट्रॅटेजी प्लॅन केल्या जातात. बड्या, कार्पोरेट निर्माते-कंपन्यांनाच हे शक्य होतं. मल्टिप्लेक्ससाठी तर 'नेट बुकिंग'च पर्याय स्वीकारला जातो. अशावेळी या कंपनी ऑफिसमधून मल्टिप्लेक्सचे शोच्या शो बुक करतात. मग, शो हाऊसफुल्ल 'दिसतो'.

पॅकेजिंग प्रिंटर, बुक बाइंडर, मार्केटिंग अँड सेल्स, प्रॉडक्शन ऑपरेशन सेल्स आणि कस्टमर सर्व्हिस इत्यादी. अशा प्रिंटिंग क्षेत्राचे शिक्षण देणाऱ्या संस्था महाराष्ट्रातही आहेत. या क्षेत्राचा अधिक अभ्यास, रिसर्च करायची इच्छा असल्यास त्यांना परदेशामध्येही मोठा वाव आहे. रिंटिंगचा विस्तार आपण बाजारामध्ये कोणतीही वस्तू खरेदी करायला गेलो, तर साध्या पेनपासून, प्लॅस्टिक पिशव्या, गिफ्ट आर्टिकल, गृहोपयोगी वस्तू अशा अनेक गोष्टींवर प्रिंटिंग केलेले आपल्याला आढळते. या वस्तूंचे सुरेख पॅकिंग करण्यासाठी सुद्धा पॅकेजिंग इंडस्ट्री, पॅकिंग प्रिंटिंग यांचा व्यवसाय मोठ्या प्रमाणात वाढतो आहे. वह्या, पुस्तके, गाइड, संदर्भग्रंथ, फ्लेक्स, निरनिराळ्या जाहिराती यांची छपाई आता टेक्नॉलॉजीमुळे सोपी झालेली आहे. रिंटिंगमधील तंत्रज्ञान रिंटिंगमध्ये स्क्रीन प्रिंटिंग, ऑफसेट प्रिंटिंग, लेटरप्रेस, वेब ऑफसेट, फ्लेक्सोग्राफी, ग्रेव्हियर अशा अनेक प्रकारच्या तंत्रज्ञानाने सध्याचे प्रिंटिंग क्षेत्र व्यापले आहे. या शिवाय विविध रंग एकाच वेळी छपाई करण्याचे तंत्रही विकसित झाले आहे. अगदी एका रंगापासून ते सहा रंगांपर्यंत छपाई करण्याची यंत्रे सज्ज आहेत. मशिनची निर्मितीसुद्धा त्यानुसार होत आहे. अभ्यासक्रमात काय? या अभ्यासक्रमामध्ये सर्व प्रकारच्या प्रिंटिंग प्रोसेसेस, टेक्नॉलॉजी व सिस्टिम्सचा विस्तृत अभ्यासक्रम आहे. यामध्ये ऑफसेट प्रिंटिंग, फ्लेक्सोग्राफी, डिजिटल इमेज अँड प्रिंटिंग याशिवाय पॅकेज डिझाइन, इंक, पेपर अँड बोर्ड्स या सर्वांचा इंजिनीअरिंगच्या दृष्टीने अभ्यास केला जातो. या अभ्यासक्रमात मूलभूत इंजिनीअरिंग शाखांचा जवळपास ४० टक्के समावेश आहे. संधी यांत्रिकी, इलेक्ट्रिकल अभ्यासक्रम पूर्ण झाल्यानंतर प्रिंटिंग आणि पॅकेजिंगमधील टेद्रा पॅक, थॉमसन प्रेस, हिंदुस्थान इन्क्स, टेक्नोव्हा, बल्लारपूर पेपर इंडस्ट्री यांसारख्या नामवंत कंपन्यांमध्ये संधी उपलब्ध होते; व्यक्तिमत्त्वांसाठी हे क्षेत्र आव्हानात्मक तर आहेच; पण त्याचबरोबर त्यांच्या कौशल्याला वाव आणि न्याय देणारे हे क्षेत्र आहे. सेल्स, मार्केटिंग, प्रॉडक्शन, सर्व्हिस एजन्सी, डीलर, मॅटेनन्स, डिस्ट्रिब्युटर, पॅकेजिंग, अँडव्हार्टायझिंग, पेजमेकर, कोरल ड्रॉ, फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, इनडिझाइन या प्रोग्राममुळे लागणारी चित्रे, फोटोंची रचना, डीटीपी याही क्षेत्रांत संधी आहेत. प्रवेश कोण घेऊ शकते? अर्थात, या संधी घेण्यासाठी काय करायचे? या वर्षी दहावीला बसलेल्या विद्यार्थ्यांना या संधीचा फायदा घेता येईल. दहावीच्या परीक्षेमध्ये ज्या विद्यार्थ्यांना ५० टक्क्यांपेक्षा जास्त गुण मिळतील, अशा सर्व विद्यार्थ्यांना प्रिंटिंगच्या पदविका अभ्यासक्रमास प्रवेश मिळू शकेल. याशिवाय अनुसूचित जाती-जमातीच्या विद्यार्थ्यांना ४५ टक्के गुणांना प्रवेश मिळू शकतो. काही अभ्यासक्रम दहावी नापास, कमी गुण पडलेले विद्यार्थी यापासून ते बारावी पास झालेले किंवा ग्रॅज्युएशन पास झालेल्या विद्यार्थ्यांना पूर्ण करता येतात.